पंजीकरण फार्म

राष्ट्रिय संगोष्ठी

"वेदों में विज्ञान के मूलभूत तत्त्व"

दिनांक–25 जनवरी 2019

नाम: ....

पदनाम: ....

विश्वविद्यालय / संस्थान / कालेज: ....

....

....

पूर्ण पत्र व्यवहार पता:

....

....

ई.मेल ....

फोन / मोबाइल नं0: ....

शोध पत्र शीर्षक ....

....

....

लेखक ....

उप–लेखक ....

पंजीकरण शुल्क विवरण:

शुल्क ....

दिनांक ....

प्रतिभागी हस्ताक्षर

प्रधान संरक्षक

श्री जगदीश नारायण मिश्र

कुलाधिपति

संरक्षक

प्रो0 पी0एन0 पाण्डेय

कुलपति

प्रो0 सुरेशचन्द्र तिवारी

प्रतिकुलपति

संयोजक

डॉ0 देव नारायण पाठक

विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग

मो0नं0–7607974120

drdnpathak9@gmail.com

सह–संयोजिका

डॉ0 सविता ओझा

संस्कृत विभाग, मो0नं0–7903616587

संयोजक सचिव

डॉ0 आदिनाथ

विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग

मो0नं0–9670829105

adinathupadhyay@gmail.com

परामर्श मण्डल

डॉ0 छाया मालवीय
अधिष्ठाता, कला संकाय

डॉ0 ममता मिश्रा
समन्वयक, हिन्दी विभाग

डॉ0 प्रबुद्ध मिश्र
समन्वयक, दर्शनशास्त्र विभाग।

डॉ0 आशीष शिवम
अधिष्ठाता, विज्ञान संकाय

डॉ0 आलोक मिश्र
वनस्पति विज्ञान विभाग

महत्वपूर्ण तिथियाँ

सारांश भेजने की तिथि : 20 जनवरी, **2019**

आमंत्रण

राष्ट्रिय संगोष्ठी

"वेदों में विज्ञान के मूलभूत तत्त्व"

दिनांक–25 जनवरी 2019

समय 10–5.00 बजे अपराह्न

आयोजक

संस्कृत विभाग एवं वनस्पति विज्ञान विभाग

नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय,

प्रयागराज

सेमिनार के सम्बन्ध में:-

"वेदों में विज्ञान के मूलभूत तत्त्व"

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न विद्यते।
एवं विदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता।।

प्राचीन ऋषियों ने जो ज्ञान अपनी आर्षदृष्टि से प्राप्त किया था, उसका संग्रहवेदों में है। "वेदन्ते ज्ञायन्ते धर्मादि पुरुषार्थ चतुष्टयोपायाः येन स वेदः।" अर्थात् धर्म अर्थ काम और मोक्ष इन पुरुषार्थों की प्राप्ति के उपाय जिसके द्वारा बताये गये हैं, उसे वेद कहते हैं। वेदार्थ को जान लेने पर धर्म, अध्यात्म शास्त्र, आचार–विचार तथा व्यवहार पद्धति का यथार्थ ज्ञान होता है। विश्व में जितने मत मतान्तर प्रचलित हैं उन सभी का स्रोत 'वेद' ही है और वहीं से उनका प्रादुर्भाव हुआ है। आधुनिक शिक्षा के जितने भी विषय पठन–पाठन के प्रचलन में हैं, वे सभी विषय वेद में उपलब्ध हैं। आज की शिक्षा पद्धति से वैदिक शिक्षा पद्धति अत्यन्त सरल है। वैदिक पद्धति से शिक्षा प्राप्त करने में समय की बहुत बचत होती है तथा धन भी अल्प व्यय होता है। लार्ड मैकाले के द्वारा दुर्भावना से निर्मित शिक्षा स्वतंत्र राष्ट्र के लिए अवनति का द्योतक है किन्तु उस पद्धति को बनाये रखने के लिए अहर्निश प्रयत्न हो रहा है। इस प्राचीनतम ग्रन्थ में लाखों करोड़ों वर्षों का इतिहास भी भरा पड़ा है। सभी दर्शन, सभी प्रकार की उपासनाएं, सदाचार, सम्पूर्ण भौगोलिक ज्ञान, खगोल ज्ञान, भूगर्भ शास्त्र, शल्य चिकित्सा विज्ञान, कृषि विज्ञान तथा सर्वविध गणित ज्ञान जो कुछ भी है, वह वेद पर अवलम्बित है। इसमें ज्ञान की उज्ज्वल ज्योति प्रकाशमान है। वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, गीता, तंत्र और अन्यान्य शास्त्र ग्रन्थ ही दानव को मानव बनाने में पूर्णतया समर्थ है तथा मानव जाति को आज भी उसकी आवश्यकता है।

उपर्युक्त तथ्य के आलोक में कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाना समय की मांग है जिससे वेदों में निहित वैज्ञानिक तत्त्वों के विषय में संगोष्ठी, कार्यशालाओं, शोधकार्यों एवं शोध पत्रों के माध्यम से विचार विमर्श किया जा सके।

संस्कृत विभाग एवं वनस्पति विज्ञान विभाग नेहरु ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय इस दिशा में महत्त्वपूर्ण रूप से "वेदों में विज्ञान के मूलभूत तत्त्व" पर दिनांक 25 जनवरी 2019 को एक राष्ट्रिय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है, अतः आप सभी मनीषियों से इस महनीय कार्य में योगदान हेतु बहुमूल्य विचारों को आमंत्रित किया जाता है।

संगोष्ठी में प्रतिभागिता हेतु निम्नलिखित महत्वपूर्ण बिन्दुओं तथा सम्बद्ध बिन्दुओं पर शोध पत्र आमन्त्रित है–

1. वेदों में ज्योतिर्विज्ञान
2. वेदों में प्राण विज्ञान
3. वेद और आधुनिक विज्ञान
4. वेदों में सौन्यविज्ञान
5. वेदों में कृषि विज्ञान
6. वैदिक गणित अनुप्रयोग
7. वेदों में भूगर्भ विज्ञान
8. वेदों में वनस्पति चिकित्सा विज्ञान
9. वेदों में विमान प्रौद्योगिकी
10. वैदिक दर्शन में आणविक सिद्धान्त
11. वेदों में शल्य चिकित्सा

प्रतिभागियों/शोधच्छात्रों से अनुरोध है कि वे मुख्य/उपविषयों से सम्बन्धित अपने आलेख की सारांशिका दिनांक 20 जनवरी 2019 तक vsngbv2019@gmail.com पर भेज दें तथा आलेख की प्रति संगोष्ठी की तिथि तक अवश्य उपलब्ध करा दें।

सारांशिका/शोधालेख हिन्दी krutidev10 (14 font) अथवा Times New Roman (12 font) में दें। सारांशिका/शोधालेख में शीर्षक, लेखक का नाम, ईमेल, मोबाइल नं0, संकाय एवं विभाग के नाम का स्पष्ट उल्लेख अवश्य करें। गुणवत्तापूर्ण, चयनित शोध पत्रों का विश्वविद्यालय से प्रकाशित **ISSN No.** युक्त शोध पत्रिका में प्रकाशन संभावित होगा।

पंजीकरण शुल्क

शिक्षाविद्/शोध छात्र	:	1000/– रू0
विद्यार्थी	:	500/– रू0

पंजीकरण प्रपत्र इस आमंत्रण पत्र के साथ संलग्न है। प्रतिभागियों से अनुरोध है कि फोटो सहित पंजीकरण हेतु भरे प्रपत्र को, पंजीकरण शुल्क के साथ संस्कृत विभाग, नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय में समय से जमा करा सकते हैं।

आयोजन स्थल

शोध केन्द्र, झूंसी ताली
नेहरु ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज

विश्वविद्यालय के सम्बन्ध में।

त्रिवेणी की पावन नगरी प्रयाग में दुर्वासा की तपोभूमि में स्थित नेहरु ग्राम भारती विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश के प्रथम ग्रामीण विश्वविद्यालय के रूप में प्रतिष्ठित है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा मान्यता प्राप्त इस मानित विश्वविद्यालय का उद्देश्य सुदूर गाँव में बसे विद्यार्थियों, जो आधुनिक तकनीकी सुविधाओं से वंचित हैं, को उच्च से उच्चतर शिक्षा प्रदान करना तथा सूचना एवं संचार के आधुनिकतम संसाधनों में निष्णात करते हुए उन्हें बेहतर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना है। साथ ही साथ उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करते हुए उन्हें स्वावलम्बी बनाना है। वर्तमान भारत में गाँव का पलायन बड़ी तीव्रता से शहर की ओर हो रहा है जिसका असर भारत की आत्मा पर दिखायी पड़ रहा है। इस समय की महती आवश्यकता है कि गाँव विकसित होते हुए गाँव में ही रहे। इसी को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय की आधारशिला रखने वाले सामाजिक चिंतक श्री जगदीश नारायण मिश्र जी के संरक्षण में यहाँ कला, विज्ञान, वाणिज्य, प्रबन्धन, तकनीकी, कम्प्यूटर अप्लिकेशन, सामान्य एवं विशिष्ट शिक्षक शिक्षा, पत्रकारिता, पुस्तकालय विज्ञान तथा अन्य पारम्परिक विषयों में स्नातक से शोध तक के विभिन्न पाठ्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है।

प्रयागराज के सम्बन्ध में:

प्रयागराज विश्व का एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक एवं धार्मिक नगर है, जिसे प्रयागराज या तीर्थराज के नाम से भी जाना जाता है। यह प्राचीन काल से ही ज्ञान का केन्द्र रहा है, यहाँ गंगा, जमुना एवं अदृश्य सरस्वती का संगम है जहाँ प्रत्येक 12 वर्ष बाद विश्व के सबसे बड़े मेले कुंभ का आयोजन होता है। स्वतंत्रता संग्राम प्रभावी भूमिका निभाने वाला शहर इलाहाबाद भारत का साहित्य एवं राजनीति का भी केन्द्र रहा है, जिसने देश को अनेक साहित्यकार एवं राजनेता दिए हैं। अपनी बसावट एवं अद्भुत वातावरण के कारण इसकी गणना देश के महत्वपूर्ण शहरों में होती है। साहित्यकार धर्मवीर भारती के शब्दों में 'इस शहर की बनावट, गठन, जिंदगी और रहन–सहन में कोई बंधे–बधाये नियम नहीं, कहीं कोई कसाव नहीं, हर जगह एक स्वच्छंद खुलाव, एक बिखरी हुई सी अनियमितता। मौसम में कोई सम नहीं, कोई संतुलन नहीं। सुबह मलय सी, दोपहर अंगारे तो शामे रेशमी....सचमुच लगता है कि प्रयाग का नगर–देवता स्वर्ग–कुंजो, से निर्वासित कोई मन मौजी कलाकार है, जिसके सृजन में हर रंग के डोरे हैं।"